भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर (2026-2027)

कक्षा - 9	विषय - हिंदी (पाठ्यक्रम-ब) पाठ्यपुस्तक - गंगा	Date – 05-05-2026
प्रश्न बैंक	पाठ: पद कवि- रैदास	Note: Pl. file in portfolio

नाम :_____अनुभाग :_____अनुक्रमांक :_____दिनांक: _____

लघु प्रश्न

प्रश्न 1. कवि के अनुसार राम का नाम क्यों नहीं छूट सकता?
उत्तर: कवि का मन राम भक्ति में पूरी तरह डूब चुका है। राम का नाम उसके जीवन का आधार बन गया है, इसलिए वह चाहकर भी राम का स्मरण छोड़ नहीं सकता।

प्रश्न 2. "तुम चंदन हम पानी" पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
उत्तर: इस पंक्ति में भक्त और भगवान का गहरा संबंध बताया गया है। जैसे पानी चंदन की सुगंध फैलाता है, वैसे ही भक्त भगवान के गुणों को अपनाकर उन्हें जीवन में प्रकट करता है।

प्रश्न 3. कवि ने स्वयं को ईश्वर का दास क्यों कहा है?
उत्तर: कवि स्वयं को ईश्वर का दास मानता है क्योंकि वह पूरी श्रद्धा और समर्पण के साथ भगवान की सेवा करना चाहता है। वह अपने जीवन को ईश्वर की भक्ति में अर्पित करना चाहता है।

प्रश्न 4 : कवि तीर्थ और व्रत को क्यों अस्वीकार करता है?
उत्तर : कवि मानता है कि सच्चा आश्रय केवल राम के चरणों में है। तीर्थ और व्रत गौण हैं; सच्ची शांति और मुक्ति केवल राम की भक्ति और समर्पण से ही मिलती है।

प्रश्न 5 "तुम सों देव और नहीं दूजा" का क्या अर्थ है?
उत्तर- इसका अर्थ है कि कवि के लिए राम ही एकमात्र देवता हैं। वह किसी अन्य देवता को नहीं मानता और सम्पूर्ण निष्ठा केवल राम पर ही रखता है।

प्रश्न 6 कवि राम पर अपनी निर्भरता कैसे व्यक्त करता है?
उत्तर- कवि अपने मन, वचन और कर्म सब राम को समर्पित करता है। यह पूर्ण विश्वास दर्शाता है कि जीवन का हर पहलू राम की कृपा और मार्गदर्शन पर आधारित है।

दीर्घ प्रश्न

प्रश्न 1. कविता में भक्त और भगवान के संबंध को कैसे दर्शाया गया है?
उत्तर: कविता में भक्त और भगवान का संबंध अत्यंत गहरा, अटूट और आत्मीय बताया गया है। कवि चंदन-पानी, चंद्रमा-चकोर जैसी उपमाओं से इस संबंध को स्पष्ट करता है। इनसे पता चलता है कि भक्त हर समय भगवान से जुड़ा रहता है और उनके बिना स्वयं को अधूरा मानता है। यह संबंध प्रेम, समर्पण और सच्ची भक्ति से परिपूर्ण है।

प्रश्न 2. 'तुम चंदन हम पानी' कविता का मुख्य भाव अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर: इस कविता का मुख्य भाव ईश्वर के प्रति गहरी भक्ति और पूर्ण समर्पण है। कवि बताता है कि सच्चा भक्त भगवान से कभी अलग नहीं हो सकता। उसका मन, शरीर और आत्मा सब ईश्वर में लीन रहते हैं। वह स्वयं को उनका सेवक मानकर जीवन भर भक्ति करना चाहता है।

प्रश्न 3 कविता में आत्मसमर्पण की भावना कैसे प्रकट होती है?
उत्तर- कविता में कवि सांसारिक संदेह, व्रत और अन्य देवताओं को त्यागकर केवल राम के चरणों में शरण लेता है। मन, वचन और कर्म का सम्पूर्ण समर्पण दिखाता है कि सच्ची भक्ति पूर्ण आत्मसमर्पण में ही निहित है।

प्रश्न 4 यह कविता हिंदी भक्तिकालीन साहित्य को कैसे दर्शाती है?
उत्तर यह कविता भक्तिकाल की परंपरा को प्रतिबिंबित करती है, जहाँ व्यक्तिगत भक्ति को कर्मकांड से अधिक महत्त्व दिया गया। कवि का राम के चरणों में पूर्ण समर्पण और प्रेम उस युग की भक्ति भावना का सजीव उदाहरण है।